Regarding peaceful resolution of issues of people of Jammu & Kashmir

श्री अब्दुल रशीद शेख (बारामूला) : सभापति महोदया, मैं इस पूरे हाउस और खासतौर से केन्द्र सरकार को याद दिलाना चाहूंगा कि वज़ीर-ए-आज़म साहब ने चंद वर्ष पहले कहा था कि हम जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ दिल की दूरी मिटाना चाहते हैं । यह अच्छी बात है, लेकिन अभी तक प्रैक्टिकली कुछ भी नहीं हुआ है । लद्दाख के लोगों के साथ बात-चीत हो रही है ।

मेरी सरकार और विपक्ष के सदस्यों से यह गुजारिश है कि जम्मू-कश्मीर के जितने भी मुद्दे हैं, उनको मानवीय दृष्टिकोण से देखा जाए । उनको राजनीतिक दृष्टिकोण से न देखा जाए । मैं यही उम्मीद रखता हूं कि जो मर्कजी सरकार है, वह बहुत जल्द जम्मू-कश्मीर के चुने हुए जनप्रतिनिधियों और बाकी हितधारकों के साथ बातचीत शुरू करे, ताकि सारे मसलों का हल निकले ।

महोदया, आपको खुद मालूम है कि जम्मू-कश्मीर के लोगों ने 35 सालों से कितनी मुसीबतों का सामना किया है । मैं चाहता हूं कि वहां पर अमन और शांति लौटे । 10 दिसबंर को अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस होता है । जितने भी हितधारक हैं, मैं उनसे अपील करता हूं कि वे वहां अमन को एक मौका दें । फिलहाल मेरा घर और संसदीय क्षेत्र तिहाड़ जेल में है । मैं वहां पर 10 दिसंबर को एक दिन के लिए भूख हड़ताल करूंगा, क्योंकि उस दिन राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया जाता है ।